पृथ्वी के सभी जीवजालों केलिए एक घोषण

भूमिकाः

पृथ्वी परिणाम करनेवाली एक जीव अस्तित्व है। पृथ्वी के सभी जीवजाल इस अस्तित्व के मुख्य अंग हैं। उसके अनुसार संसार भर में व्याप्त जीव समाज के अंग होने का विचार हर एक मानव पर पैदा करना चाहिए। पृथ्वी के भविष्य केलिए हमें आपस में अपने लक्ष्य और उत्तरदायित्व बाँट करने भी चाहिए।

अपनी पृथ्वी की परिणाम केलिए हम सब लोगों को अपना - अपना काम करना है। इसके अतिरिक्त, विश्व शांति पाने केलिए हम सब को अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्य पूरे करने भी चाहिए। आज तक इस पृथ्वी में कुछ ही लोगों को जीवन में पूर्ण तसल्ली मिली है। सीमित प्राकृतिक साधन और भूमि केलिए हमें कई संधर्षों को सामना करना पड़ता है। इसके फलस्वरूप संसार भर में व्याप्त परिस्थिति पर बुरा प्रभाव होना पडता है।

नयी सदी में दाखिल होने पर, अन्य किसी के परे, मानव समाज के प्रत्येक व्यक्ति में सचेत उठाने के द्वारा ही विश्व शांति हम प्राप्त कर सकेंगे। आज प्रत्येक मानव स्त्री या पुरुष के हृदय में शांति और समन्वय पैदा करनेवाला दायित्व उपेक्षा न कर सकता है। मानव जनता का प्रत्येक व्यक्ति इस उत्तरदायित्व के बारे में जानने से ही विश्व शांति प्राप्त कर सके। इस सामान्य लक्ष्य के लिए हमें आपस में मिल जुलाकर काम करना चाहिए।

शक्ति, धन - दौलत, शोहरात, जानकारी तकनीक की विद्या, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में आज तक व्यक्ति, राष्ट्र और संगठन के बीच में मानव राशी को अपना अधिकार विभक्त किया गया है। देनेवाले और लेनेवाले के बीच में तथा मदद देनेवाले और मदद पाने वाले के बीच में कई भिन्नताएँ है।

हम यहाँ घोषणा करते हैं कि इन युग्म भावों और भिन्नताओं को पूर्ण रूप से, नयी धारणा के आधार पर दूर करने का प्रयास करेंगे। यह विश्व शांति के निर्मांग में आधार शिला के रूप में काम करेगा।

सार्वजनिक सिद्धांतः

वर्तमान युग में मानव - समाज को समान विचार - धारा के पथ में आना पडेगा। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक राष्ट्र अपने - अपने गुण - विशेषों को स्वतंत्रा रूप से प्रकट करेंमे तथा आपस में पृथ्वी के अन्य, जीवजालों से एकता से रहेंगे। इन स्वप्नों का साकार करने केलिए हम नीचे दिये निर्देशों को आपके सामने रखते हैं।

1. सभी जीव - जालों से आदर प्रकट करनाः

प्रेम और सहयोग के आधार पर सभी जीवजालों का आदर प्रकट करनेवाली एक दुनिया को हम सृजन करेंगे।

2. सभी भिन्नताओं का आदरः

अलग - अलग प्रजाति, भिन्न - भिन्न भील वर्ग, विभिन्न धर्म तथा संस्कृतियों का आदर प्रकट करनेवाले का एक सुन्दर संसार हमें सृजन करना चाहिए। सामाजिक, भौतिक और आत्मीय भेदभावों से तथा जबरदस्त विरोध से संसार की मुक्ति पाएगी। इस प्रकार विविधता स्वीकार करनेवाला और आस्वादन करनेवाला एक दुनिया की सृष्टि हम करेंगे।

3. प्रकृति से कृतज्ञता प्रकट करना तथा मिलजुलकर रहनाः

प्रकृति से सौहार्द प्रकट करनेवाले सभी जीव - जंतु जालों से कृतज्ञता प्रकट करने वाले की एक दुनिया को हम सृजन करेंगे।

4. आत्मीयता और भौतिकता के बीच की रुचिकर मिलापः-

भौतिक और आत्मीय सभ्यता केलिए हमें एक रुचिकर मिलाप की सृष्टि करनी चाहिए। भौतिकता को देनेवाली अधिक प्रधानता विच्छेद करके स्वस्थ आत्मीयता मानव राशी में पैदा करनेवाला एक संसार हमें बनाना चाहिए। भौतिक अधिकता के साथ आत्मीय दौलत को मूल्य देने वाला एक संसार का सृजन है हमारा लक्ष्य ।

व्यवहारित दृष्टि में:

इन सिद्धांतों को व्यवहारिक करने केलिए हम नीचे दी गयी बाते करेंगे।

1. व्यक्तिगत रूप से:

वर्तमान युग में शासन - संस्थाओं एवं प्रजाति विभागों में व्यक्ति को सर्वमान्यता प्राप्त हुई है। हमें इस युग से बाहर जाना चाहिए। हमारे दृष्टिकोण में व्यक्ति कों स्वतंत्र होना चाहिए। यह स्वार्थता के अर्थ में नहीं बल्कि मानव समाज का स्वतंत्र अंग के रूप में हर एक व्यक्ति को स्त्री या पुरुष हो उसके उत्तरदायित्व स्वीकार करें तथा अपना लक्ष्य पूरा करना भी चाहिए।

हम में यह लक्ष्य भी होना चाहिए कि हर एक मानव के हृदय में स्नेह, रुचिकर मिलाप, करुणा आदि भावों को पूर्ण रूप से भरना है। इस प्रकार संसार में सब तरह की शांति मिलेगी।

विशष्टीकरण के क्षेत्रों में

शिक्षा, विज्ञान, कला संस्कार धर्म, दर्शन, राजनीतिक, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्रों में बँदिधक होशियार की सहायता से और सब की सहयोग, से तकनीक जानकारी का लाभ उठाएँ। उसी प्रकार हम सहयोग का एक समाज की सृष्टि करेंगे।

युव पीढियों के रूप में

बीसवी सदी में बच्चों के आचार्य माता - पिता और अध्यापक थे। यह मात्र नहीं, बल्कि सब पढे जानेवाले थे। लेकिन इक्कीसवीं सद्दी में बच्चों के अचरज गुणों से बुजुगे को पढना चाहिए। उदाहरण के रूप में बच्चों की विशुद्धि, भोलापन, प्रसन्नचचित्रता, बौद्धिक भावना से प्रेरणा मिलने वाले बुजुगों की पीढियाँ। विश्व शांति की सृष्टि केलिए, सुन्दर भविष्य के लिए युव पीढ़ियाँ नेतृत्व करेंगी।

पृथ्वी में शांति चारों ओर फैलें